राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

संक्षिप्त जीवनी एवं राजनीतिक क्रियाकलाप

▶ महात्मा गांधी वीडियो लिंक खोलें (यहाँ क्लिक करें)

मोहनदास करमचंद गांधी, जिन्हें विश्व 'महात्मा' और भारत 'राष्ट्रपिता' के रूप में जानता है, वैश्विक इतिहास के उन विरले महापुरुषों में से हैं जिन्होंने सत्य और अहिंसा को केवल व्यक्तिगत गुण न मानकर सामूहिक राजनीतिक आंदोलन का अचूक अस्त्र बना दिया। उनके विचार, दर्शन और राजनीतिक क्रियाकलापों ने न केवल भारत को सदियों की गुलामी से मुक्त कराया, बल्कि पूरी दुनिया में मानवाधिकारों और स्वतंत्रता के आंदोलनों को एक नई दिशा दी।

1. प्रारंभिक जीवन, शिक्षा और वैचारिक पृष्ठभूमि (1869 - 1892)

2 अक्टूबर 1869

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर एक रूढ़िवादी हिंदू परिवार में हुआ था। उनके पिता करमचंद गांधी पोरबंदर के दीवान थे और माता पुतलीबाई अत्यंत धार्मिक और सरल स्वभाव की महिला थीं, जिनके धार्मिक आचरण (व्रत, उपवास) का मोहनदास के बालमन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

1883

मात्र 13 वर्ष की अल्पायु में उनका विवाह कस्तूरबा कपाड़िया (जिन्हें बाद में 'बा' कहा गया) से कर दिया गया।

1888 - 1891

अपनी प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा राजकोट से पूरी करने के बाद, वे सितंबर 1888 में कानून (बैरिस्टरी) की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड (लंदन) चले गए। लंदन में रहते हुए उन्होंने शाकाहार, गीता के दर्शन और पाश्चात्य संस्कृति का गहरा अध्ययन किया। जून 1891 में उन्होंने बैरिस्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण की और भारत लौट आए।

1891 - 1892

भारत लौटने के बाद उन्होंने बम्बई (मुंबई) और राजकोट में वकालत शुरू की, लेकिन संकोची स्वभाव और व्यावहारिक अनुभव की कमी के कारण उन्हें प्रारंभिक दौर में विशेष सफलता नहीं मिली।

2. दक्षिण अफ्रीका का दौर: सत्याग्रह का जन्म (1893 - 1914)

गांधी जी के जीवन और उनकी राजनीतिक चेतना में सबसे बड़ा मोड़ दक्षिण अफ्रीका की यात्रा से आया। एक व्यापारिक फर्म (दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी) के कानूनी सलाहकार के रूप में वे दक्षिण अफ्रीका गए, जहाँ उन्होंने अश्वेतों और भारतीय प्रवासियों के प्रति ब्रिटिश शासकों के चरम नस्लीय भेदभाव का सामना किया।

- **1893:** दक्षिण अफ्रीका के पीटरमैरिट्सबर्ग रेलवे स्टेशन पर उन्हें 'केवल श्वेतों के लिए' आरक्षित प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बाहर फेंक दिया गया। इस अपमान ने गांधी जी के भीतर छिपे क्रांतिकारी को जगाया और उन्होंने नस्लभेद के खिलाफ लड़ने का संकल्प लिया।
- **1894:** उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय प्रवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए **'नेटाल भारतीय कांग्रेस' (Natal Indian Congress)** की स्थापना की। इसके माध्यम से उन्होंने भारतीयों को संगठित करना शुरू किया।
- **1903:** उन्होंने जोहान्सबर्ग से 'इंडियन ओपिनियन' (Indian Opinion) नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया, जो विचारों के प्रचार-प्रसार का मुख्य माध्यम बना।
- **1904:** डरबन के निकट उन्होंने 'फिनिक्स सेटलमेंट' (Phoenix Settlement/Farm) की स्थापना की, जहाँ सामुदायिक जीवन, सादगी और आत्मनिर्भरता के प्रयोग शुरू हुए।
- **1906 (प्रथम सत्याग्रह):** ट्रांसवाल सरकार ने भारतीयों के लिए एक अपमानजनक 'एशियाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट' (ब्लैक एक्ट) पारित किया। इसके विरोध में गांधी जी ने जोहान्सबर्ग में अपनी पहली सामूहिक सविनय अवज्ञा और सत्याग्रह की शुरुआत की।
- **1908:** राजनीतिक गतिविधियों और सविनय अवज्ञा के कारण गांधी जी को पहली बार दक्षिण अफ्रीका में जेल जाना पड़ा।
- **1909:** इंग्लैंड से दक्षिण अफ्रीका लौटते समय जहाज पर उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **'हिंद स्वराज' (Hind Swaraj)** लिखी, जिसमें उन्होंने आधुनिक सभ्यता की आलोचना की और वास्तविक स्वराज की रूपरेखा प्रस्तुत की।
- **1910:** उन्होंने अपने मित्र हरमन कालेनबाख की मदद से जोहान्सबर्ग के पास **'टॉल्स्टॉय फार्म'** की स्थापना की, जो बाद में सत्याग्रहियों का मुख्य केंद्र बना।
- **1913 – 1914:** तीन पाउंड के दमनकारी टैक्स और गैर-ईसाई विवाहों को अमान्य घोषित करने वाले कानून के खिलाफ उन्होंने 'महान मार्च' (Great March) निकाला। अंततः, ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा और 'भारतीय राहत अधिनियम' पारित कर अधिकांश दमनकारी कानून वापस लेने पड़े।

3. भारत आगमन और प्रारंभिक राजनीतिक प्रयोग (1915 - 1918)

9 जनवरी 1915

गांधी जी स्थायी रूप से भारत लौट आए (इस दिन को अब भारत में 'प्रवासी भारतीय दिवस' के रूप में मनाया जाता है)। उनके राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें सक्रिय राजनीति में उतरने से पहले कम से कम एक वर्ष तक पूरे भारत का भ्रमण करने की सलाह दी।

1915 (साबरमती आश्रम की स्थापना)

उन्होंने अहमदाबाद के कोचरब क्षेत्र में एक आश्रम स्थापित किया, जिसे 1917 में साबरमती नदी के किनारे स्थानांतरित कर दिया गया। यह **'साबरमती आश्रम'** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

1917 (चंपारण सत्याग्रह)

बिहार के चंपारण में ब्रिटिश जमींदारों द्वारा किसानों को ज़बरदस्ती अपनी ज़मीन के 3/20 हिस्से पर नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जाता था (तिनकठिया प्रणाली)। स्थानीय नेता राजकुमार शुक्ल के निमंत्रण पर गांधी जी चंपारण पहुँचे। उन्होंने भारत में अपने पहले सफल सत्याग्रह का प्रयोग किया। सरकार को झुकना पड़ा और तिनकठिया प्रणाली समाप्त की गई। इसी आंदोलन के दौरान रवींद्रनाथ टैगोर ने उन्हें 'महात्मा' की उपाधि दी थी।

1918 (अहमदाबाद मिल हड़ताल)

अहमदाबाद के कॉटन मिल मालिकों और मजदूरों के बीच 'प्लेग बोनस' को लेकर विवाद था। गांधी जी ने मजदूरों का साथ दिया और भारत में अपनी पहली भूख हड़ताल की। परिणामस्वरूप, मिल मालिक मजदूरों के वेतन में 35% वृद्धि करने पर सहमत हुए।

1918 (खेड़ा सत्याग्रह)

गुजरात के खेड़ा जिले में अकाल के कारण फसल नष्ट हो जाने के बावजूद ब्रिटिश सरकार लगान वसूल कर रही थी। गांधी जी और वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में किसानों ने कर-अदायगी बंद कर दी। अंततः सरकार को गुप्त आदेश जारी करना पड़ा कि लगान केवल समर्थ किसानों से ही लिया जाए।

4. राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व: वर्षवार राजनीतिक क्रियाकलाप (1919 - 1948)

1919 के बाद भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पूरी तरह से गांधीवादी युग में प्रवेश कर गया। उन्होंने कांग्रेस को चंद एलीट वर्ग की संस्था से निकालकर एक वास्तविक जन-आंदोलन में बदल दिया।

रौलट एक्ट और असहयोग आंदोलन का दौर (1919 - 1924)

- **1919:** ब्रिटिश सरकार ने 'रौलट एक्ट' (काला कानून) पारित किया। गांधी जी ने इसके खिलाफ 6 अप्रैल 1919 को देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया।
- **13 अप्रैल 1919 (जलियांवाला बाग हत्याकांड):** अमृतसर के जलियांवाला बाग में शांतिपूर्ण सभा पर जनरल डायर ने अंधाधुंध गोलियां चलवाईं। इस वीभत्स नरसंहार के विरोध में उन्होंने अंग्रेजों द्वारा दी गई 'कैसर-ए-हिंद' की उपाधि लौटा दी।
- **1920 (असहयोग और खिलाफत आंदोलन):** अगस्त 1920 में उन्होंने औपचारिक रूप से 'असहयोग आंदोलन' की शुरुआत की। सरकारी उपाधियों, स्कूलों, अदालतों और विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया गया तथा स्वदेशी को बढ़ावा दिया गया।
- **1922 (चौरी-चौरा कांड):** 5 फरवरी 1922 को चौरी-चौरा नामक स्थान पर उत्तेजित भीड़ ने पुलिस थाने में आग लगा दी। अहिंसा के पुजारी गांधी जी ने 12 फरवरी 1922 को असहयोग आंदोलन तुरंत वापस ले लिया।
- **1924 (बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन):** गांधी जी ने अपने जीवन में केवल एक बार बेलगाम (कर्नाटक) में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की।

रचनात्मक कार्य और सविनय अवज्ञा की नींव (1925 - 1929)

- **1925 - 1928:** सक्रिय राजनीति से कुछ समय की दूरी बनाकर गांधी जी ने अस्पृश्यता (छुआछूत) निवारण, खादी के प्रचार, हिंदू-मुस्लिम एकता और नशामुक्ति जैसे सामाजिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित किया।
- **1929 (लाहौर अधिवेशन):** जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस ने 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव पारित किया। गांधी जी को पुनः एक नए राष्ट्रव्यापी आंदोलन के नेतृत्व की जिम्मेदारी सौंपी गई।

सविनय अवज्ञा आंदोलन और गोलमेज सम्मेलन (1930 - 1934)

- **1930 (दांडी मार्च और सविनय अवज्ञा आंदोलन):** 12 मार्च 1930 को गांधी जी ने अपने 78 स्वयंसेवकों के साथ साबरमती आश्रम से दांडी तक 24 दिनों की ऐतिहासिक 'दांडी यात्रा' शुरू की। 6 अप्रैल 1930 को उन्होंने नमक कानून तोड़ा और 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' का शंखनाद किया।
- **1931 (गांधी-इर्विन समझौता और द्वितीय गोलमेज सम्मेलन):**5 मार्च 1931 को 'गांधी-इर्विन समझौता' हुआ। गांधी जी लंदन में आयोजित द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए।
- **1932 (कम्यूनल अवार्ड और पूना पैक्ट):**ब्रिटिश सरकार द्वारा घोषित 'कम्यूनल अवार्ड' के खिलाफ उन्होंने यरवदा जेल में आमरण अनशन शुरू किया। अंततः, डॉ. बी.आर. अंबेडकर और गांधी जी के बीच 26 सितंबर 1932 को ऐतिहासिक**'पूना पैक्ट' (Poona Pact)** हुआ।

हरिजन कल्याण और व्यक्तिगत सत्याग्रह (1933 - 1941)

- **1933 - 1934:** गांधी जी ने अछूतों को 'हरिजन' (ईश्वर के संतान) नाम दिया और 'हरिजन' नामक समाचार पत्र का संपादन शुरू किया।
- **1936:** उन्होंने महाराष्ट्र के वर्धा के पास 'सेगांव' में अपना ठिकाना बनाया, जिसे बाद में **'सेवाग्राम आश्रम'** के नाम से जाना गया।
- **1940 (व्यक्तिगत सत्याग्रह):** वैचारिक विरोध दर्ज कराने के लिए 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' शुरू किया गया, जिसके पहले सत्याग्रही आचार्य विनोबा भावे और दूसरे जवाहरलाल नेहरू बने।

भारत छोड़ो आंदोलन और स्वतंत्रता की सुबह (1942 - 1947)

- **1942 (भारत छोड़ो आंदोलन):** 8 अगस्त 1942 को बम्बई के गवालिया टैंक मैदान से 'भारत छोड़ो आंदोलन' (Quit India Movement) का प्रस्ताव पारित हुआ। इसी ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने राष्ट्र को **'करो या मरो' (Do or Die)** का अमर मंत्र दिया।
- **1942 - 1944:** गांधी जी को पुणे के आगा खां पैलेस में नजरबंद किया गया। इसी दौरान फरवरी 1944 में कस्तूरबा गांधी का निधन हो गया।
- **1946 (सांस्कृतिक दंगे और नोआखली यात्रा):** भीषण सांप्रदायिक दंगों को शांत करने के लिए गांधी जी बंगाल के नोआखली के गांवों में नंगे पैर घूमे। लॉर्ड माउंटबेटन ने उन्हें **"One Man Boundary Force"** की उपाधि दी थी।
- **15 अगस्त 1947 (स्वतंत्रता और विभाजन):** देश के विभाजन से दुखी गांधी जी स्वतंत्रता उत्सव के दिन दिल्ली के समारोहों में शामिल नहीं हुए, बल्कि कोलकाता में दंगों को रोकने के लिए उपवास पर बैठे थे।

5. महाप्रयाण (1948)

30 जनवरी 1948: शाम को जब वे दिल्ली के बिड़ला हाउस में संध्या प्रार्थना के लिए जा रहे थे, तब नाथूराम गोडसे नामक व्यक्ति ने उनकी छाती में तीन गोलियां मारकर उनकी निर्मम हत्या कर दी। उनके मुख से निकले अंतिम शब्द थे—"हे राम"। उनकी मृत्यु पर जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, "हमारे जीवन से प्रकाश चला गया है और चारों ओर अंधकार छा गया है।"

wisdomheadsir

6. गांधीवादी दर्शन और प्रासंगिकता

सत्य और अहिंसा	सत्य ही ईश्वर है। अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा न करना नहीं है, बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी को दु:ख न पहुँचाना है।
सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह करना। विरोधी के प्रति घृणा के बिना, कष्ट सहकर उसका हृदय परिवर्तन करना ही इसका मूल सिद्धांत है।
सर्वोदय और अंत्योदय	समाज के सभी वर्गों का उदय (सर्वोदय) और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का कल्याण (अंत्योदय)।
ट्रस्टीशिप	धनवान व्यक्ति अपने धन का मालिक नहीं, बल्कि समाज की संपत्ति का ट्रस्टी (रक्षक) है, जिसका उपयोग जनहित में होना चाहिए।
स्वदेशी	स्थानीय उद्योगों (कुटीर उद्योग) को बढ़ावा देना और सत्ता का विकेंद्रीकरण कर गांवों को आत्मनिर्भर 'ग्राम स्वराज' बनाना।

"आने वाली पीढ़ियां शायद ही विश्वास कर सकेंगी कि हाड़-मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति कभी इस धरती पर चला था।"

- अल्बर्ट आइंस्टीन

निष्कर्ष: महात्मा गांधी का जीवन इस बात का जीवंत प्रमाण है कि नैतिक बल, अडिग संकल्प और निस्वार्थ जनसेवा के माध्यम से दुनिया की सबसे बड़ी साम्राज्यवादी शक्ति को भी झुकाया जा सकता है। आप महात्मा गांधी पर आधारित विस्तृत वीडियो भी देख सकते हैं: **यहाँ क्लिक करके वीडियो देखें**। गांधी जी के विचार संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए सदैव मार्गदर्शक बने रहेंगे।